

सारे विरज- तोरें हारो- कन्हैया ॥२॥  
सारे विरज तोरें हारो-

जब- जब माखन बैचन निकरी ॥२॥  
तेने दुपखें पुकारो- कन्हैया

सारे विरज तोरें-----

चीर चुराये तुमने मुरारी ॥२॥  
ठाढ़ो रखो थो- उधारो- कन्हैया

सारे विरज तोरें-----

ठेर सुनी जेंसई वंशी की ॥२॥  
लाल खों धरनी में पारो- कन्हैया

सारे विरज तोरें-----

नाँच नचावे सारी- सारी रतियाँ ॥२॥  
दैया रे- दई को मारो- कन्हैया

सारे विरज तोरें-----

सुन "श्री बाबा श्री" जेंसई घर को पहुँची ॥२॥  
मोहे सास ने मारो- कन्हैया

सारे विरज तोरें-----